काशी विश्वनाथ धाम का लोकार्पण 8 | जनरल रावत की मृत्यु पर खुशी मनाने वाले 11 | केसरिया रंग में रंगा जयपुर 12 | मातृशक्ति का अपना पन्ना 17

पाक्षिक

पाथेय कण

₹ 5

www.patheykan.com

पौष कृ.14, वि.2078, युगाब्द 5123, 1 जनवरी, 2022

हिंदू धर्म छोड़कर गए लोग करें घर वापसी -भागवत

बढ़ रही है पूर्व मुसलमानों (ExMuslims) की संख्या

अपनी जड़ों की ओर लौट रहे हैं लोग

patheykan@gmail.com | patheykan | @patheykan1

कुशल संगठनकर्ता और सर्वश्रेष्ठ व्यवस्था के पर्याय थे सोहन सिंह जी-आलोक कुमार

'सोहन सिंह स्मृति द्वार' और 'सोहन सिंह मार्ग' का हुआ लोकार्पण

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक सोहन सिंह जी भारत माता के सच्चे सपूत के रूप में राष्ट्रभक्ति, अनुशासन और समर्पण का श्रेष्ठ उदाहरण थे। उन्होंने राजस्थान, पंजाब, हरियाणा और दिल्ली सहित अन्य राज्यों में संघ कार्य को समर्पित भाव से आजीवन दिशा दी। उक्त विचार संघ के सह प्रचार प्रमुख श्री आलोक कुमार ने 12 दिसम्बर को सोहन सिंह जी के जन्म स्थान बुलंदशहर के हरचना गांव में आयोजित 'सोहन सिंह स्मृति दिवस' पर व्यक्त किए।

उन्होंने कहा कि सोहन सिंह जी कुशल संगठनकर्ता और सर्वश्रेष्ठ व्यवस्था के पर्याय थे। जीवन के अंतिम समय तक उन्होंने अपने कार्य स्वयं ही किए और अत्यधिक अस्वस्थता के बावजूद भी उन्होंने कभी भी इस क्रम में बाधा नहीं आने दी।

राजस्थान के क्षेत्र संघचालक डॉ.रमेश अग्रवाल ने अपने संस्मरण में कहा कि सोहन सिंह जी ने राजशाही से निकले राजस्थान में सामाजिक समरसता का निर्माण करने में विशेष भूमिका निभाई। उन्होंने दो दशकों की निरंतर सक्रियता के दौरान विभिन्न जाति समूहों को आपस में जोड़ा और राष्ट्र कार्य के लिए प्रेरित किया। उन्होंने ऐसे कार्यकर्ताओं का विशाल समूह तैयार किया,जिसके कारण राजस्थान की गिनती संघ दृष्टि से आदर्श प्रांतों में होती है।

इस अवसर पर जिला पंचायत द्वारा उनकी स्मृति में तैयार किए गए 'सोहन सिंह स्मृति द्वार' और 'सोहन सिंह मार्ग' का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम में संघ के अखिल भारतीय बौद्धिक शिक्षण प्रमुख श्री स्वांतरंजन, राजस्थान क्षेत्र प्रचारक श्री निम्बाराम सहित संघ के कई वरिष्ठ अधिकारी, विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी व स्वयंसेवक बड़ी संख्या में उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन सह विभाग कार्यवाह, बुलंदशहर श्री नरेश कुमार ने किया।

जीवन–परिचय

सोहन सिंह जी का जन्म 18 अक्टूबर, 1923 को उत्तर प्रदेश स्थित बुलंदशहर के ग्राम हरचना में चौधरी रामसिंह के घर हुआ था। 16 वर्ष की आयु में वे संघ के स्वयंसेवक बने। 1942 में तत्कालीन सरसंघचालक माधवराव गोलवलकर से प्रेरित होकर दिल्ली व आसपास के 80 युवक प्रचारक बने जिनमें सोहन सिंह भी सम्मिलित थे।

1948 में संघ पर प्रतिबंध के दौरान वे जेल गए। प्रतिबंध हटने के बाद उन्होंने करनाल, रोहतक, झज्जर और अम्बाला का कार्य देखा। 1973 में उन्हें जयपुर विभाग का कार्यभार देकर राजस्थान भेजा गया। 1975 में लगे आपातकाल में उन्हें जयपुर से बंदी बनाया गया। इसके पश्चात् वे लगभग 10 वर्ष राजस्थान प्रांत तथा क्षेत्र प्रचारक, 1987 से 96 तक दिल्ली में सहक्षेत्र व क्षेत्र प्रचारक, सन् 2000 तक धर्म जागरण विभाग के राष्ट्रीय प्रमुख तथा 2004 तक उत्तर क्षेत्र के प्रचारक प्रमुख रहे।

पाथेय कण पोर्टल पर पढ़ें (दिए गए लिंक पर क्लिक करें)

- देशव्यापी स्वयंसेवी संगठनों का सच https://bit.ly/32pexiO
- जब 400वर्षों की पुर्तगाली गुलामी से मुक्त हुआ गोवा https://bit.ly/3GVwRiu
- परमात्मा का गीत है गीता https://bit.ly/3yvloTF
- कृषि औद्योगिक विकास का आधार https://bit.ly/3sxpJF6

पाक्षिक
पाथेय कण

पौष कृष्ण 14 से
पौष शुक्ल 13 तक
विक्रम संवत् 2078,
युगाब्द 5123

1-15 जनवरी, 2022
वर्ष 37 : अंक 17

सम्पादक
रामस्वरूप अग्रवाल

सह सम्पादक
मनोज गर्ग

प्रबंध सम्पादक
माणकचन्द

सह प्रबंध सम्पादक
ओमप्रकाश

अक्षर संयोजन
कौशल रावत

सहयोग राशि
एक वर्ष ₹150/-
पन्द्रह वर्ष ₹1500/-

प्रबंधकीय कार्यालय
'पाथेय भवन'
4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र,
अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर,
जयपुर-302017 (राज.)

- सम्पर्क -
प्रबंध : 99297 22111
प्रेषण : 86192 73491

E-mail
patheykan@gmail.com
Website
www.patheykan.in

'अवैध मतांतरण पर रोक' बने राष्ट्रनीति

कर्नाटक विधान सभा ने धर्म स्वातंत्र्य विधेयक 23 दिसंबर को पारित किया। 'धर्म स्वातंत्र्य विधेयक' अर्थात् छल, कपट, अनुचित प्रभाव, दबाव आदि के द्वारा किसी व्यक्ति का धर्म बदलने पर प्रतिबंध लगाने वाला कानून। इस कानून से किसे ऐतराज हो सकता है? परन्तु नहीं जी, प्रमुख विपक्षी दल कांग्रेस ने इस कानून का पूरी शक्ति से विरोध किया। यहाँ तक कि कांग्रेस के नेता शिव कुमार ने विधान सभा में विधेयक की प्रति तक फाड़ दी।

कांग्रेस का इतिहास इसकी वर्तमान नीति और व्यवहार से विपरीत रहा है। दबाव, अनुचित प्रभाव या भौतिक प्रलोभन देकर किए गए मतांतरण (धर्मांतरण) पर रोक का प्रावधान संविधान में शामिल किए जाने का प्रस्ताव संविधान सभा में आया था। तब संविधान सभा में कांग्रेस ने पुरजोर तरीके से इस प्रस्ताव का समर्थन किया। कांग्रेस के नेता श्री पुरुषोत्तम दास टण्डन ने कहा, ''एक धर्म से दूसरे धर्म में व्यक्ति को मतांतरित करने या ऐसी गतिविधियों में भाग लेने के कार्य को हम कांग्रेस के लोग बहुत अनुचित समझते हैं।''

संविधान सभा के सभी ईसाई सदस्य इस प्रस्ताव का विरोध कर रहे थे। एक ईसाई सदस्य श्री सीई गिब्बन ने कहा कि श्री टण्डन सभी कांग्रेसियों की तरफ से कैसे बोल सकते हैं। तब कांग्रेस के सदस्यों ने जोर से कहा,'' क्यों नहीं''। एक कांग्रेसी श्री बालकृष्ण शर्मा ने तो खड़े होकर इस बात की पुष्टि की और स्पष्ट किया कि कांग्रेसी सदस्य तो 'धर्म प्रचार' का अधिकार दिए जाने के भी विरोधी हैं। बहस में भाग लेते हुए सरदार वल्लभ भाई पटेल ने कहा, ''सभी भली-भांति जानते हैं कि देश में व्यापक स्तर पर मतांतरण, दबाव से मतांतरण, बलपूर्वक तथा अनुचित प्रभाव से मतांतरण होता है और हम इस तथ्य को छिपा नहीं सकते कि बच्चों को भी मतांतरित किया जाता है।''

यह देश का दुर्भाग्य था कि संविधान सभा ने ईसाई सदस्यों के विरोध एवं दबाव के आगे झुकते हुए समाज को सुरक्षा प्रदान करने वाले इस प्रावधान को संविधान में शामिल नहीं किया। तो भी, इतना तो साफ है कि कांग्रेस अनुचित दबाव, प्रभाव, धोखा आदि से मतांतरण के विरोध में थी। हिमाचल प्रदेश के कांग्रेसी मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह के समय वहाँ अवैध मतांतरण पर रोक लगाने वाला कानून पारित किया गया, परन्तु अब कांग्रेस ने 'यू टर्न' लेते हुए अवैध मतांतरण पर रोक लगाने वाले कानून का ही विरोध करना आरंभ कर दिया है।

1968 में मध्यप्रदेश में गोविन्द नारायण सिंह के नेतृत्व में बनी संयुक्त विधायक दल की पहली गैर कांग्रेसी सरकार ने अवैध मतांतरण पर प्रतिबंध लगाने वाला कानून पारित किया था। उस सरकार में समाजवादी पार्टी तथा वामपंथी दल शामिल थे। इसलिए कह सकते हैं कि लगभग सभी गैर कांग्रेसी दल कभी न कभी अवैध मतांतरण पर रोक के लिए कानून बनाने के पक्ष में रहे हैं।

मध्य प्रदेश में श्री रविशंकर शुक्ल के नेतृत्व में बनी पहली कांग्रेस सरकार ने ही ईसाई मिशनरियों द्वारा किए जा रहे अवैध मतांतरण की जांच करने के लिए न्यायमूर्ति भवानी शंकर नियोगी की अध्यक्षता में एक आयोग बनाया था। इस 'नियोगी आयोग' ने व्यापक जांच के बाद पाया कि चर्च एक अंतरराष्ट्रीय षड्यंत्र का हिस्सा है तथा चर्च के कार्यों का मूल उद्देश्य मतांतरण के माध्यम से राष्ट्रांतरण है। चर्च मतांतरण के लिए छल, झूठ, प्रलोभन तथा भय का सहारा लेता है। नियोगी आयोग ने कानून बनाकर चर्च के मतांतरण पर तुरंत रोक लगाने की अनुशंसा की थी।

अब तक 10 राज्यों ने अवैध मतांतरण पर रोक लगाने वाले 'धर्म स्वातंत्र्य अधिनियम' कानून बनाए हैं। कुछ मामले 'राष्ट्रनीति' से जुड़े हुए मानकर सभी राजनीतिक दलों को उनके संबंध में आम सहमति बनानी चाहिए। छल, झूठ, प्रलोभन,अनुचित दबाव, भय आदि से किए गए मतांतरण पर रोक का मामला इसी प्रकार का है। ●

बढ़ रही है 'पूर्व मुसलमानों' (EXMuslims) की संख्या

यूरोप से चली इस्लाम त्यागने की हवा अब पूरी दुनिया में पहुँच गई है। इससे इस्लामी देश भी अछूते नहीं हैं। एक सर्वे के अनुसार भारत के भी 6 प्रतिशत मुसलमानों का अपने मजहब में विश्वास नहीं रहा है। क्या है इस मोह भंग का कारण?

इस्लामी आतंकवादी संगठन 'हमास' के लिए लंबे समय तक काम करने वाले फिलिस्तीन में जन्मे मोसाब हसन यूसुफ का अपने मजहब से विश्वास उठने पर उसने इस्लाम त्याग दिया। इससे बड़ी खलबली मची।

मोसाब के आस्था परिवर्तन से परिचित लखनऊ के एक युवा कहते हैं– '' भारत में यही स्थिति सैयद वसीम रिजवी की है। जबसे उन्होंने इस्लाम और कुरान पर प्रश्न उठाने आरंभ किए, वे मौलानाओं और मुफ्तियों की घृणा के पात्र बन गए। वसीम रिजवी का इस्लाम त्यागना एक बड़ी घटना है।''

नवम्बर, 2015 में ट्विटर पर एक हैशटैग ट्रेंड हुआ था– # एक्समुस्लिमबिकॉज। इसमें यूरोप के अनेक मुसलमानों ने अपने सीने पर एक तख्ती लगाकर अपनी फोटो ट्वीट की थी कि उन्होंने इस्लाम क्यों छोड़ा। यूरोप से चली यह हवा विश्व भर में फैल गयी है। भारत में भी ऐसा हो रहा है, परन्तु वे खुले में नहीं आते। पिछले वर्ष तक इस्लाम त्यागने वाले 2-3 यू-ट्यूबर ही भारत के थे। अब संख्या बढ़ रही है। ये लोग अपने वीडियो से भारतीय मुसलमानो को सच से परिचित करा रहे हैं।

शिक्षा और तकनीक के इस युग में मौलानाओं और मुफ्तियों को डर मोसाब यूसुफ या वसीम रिजवी से नहीं है। उन्हें डर उन लाखों लोगों से है, जिनका जन्म तो किसी मुस्लिम परिवार में हुआ था, लेकिन अब वे स्वयं को मुसलमान नहीं कहते। ये वे लोग हैं जो सवाल उठाते हैं।

सबसे पहली बात जो इस्लाम छोड़ने वालों को खटकती रही, वह है मजहब के आधार पर घृणा का भाव। वे प्रश्न करते हैं कि इस्लाम में गैर मुस्लिम मानवों से इतनी घृणा क्यों है? उन्हें काफिर जैसे घृणास्पद संबोधन से क्यों संबोधित किया जाता है?

कुरान में काफिर की सबसे स्पष्ट परिभाषा इसके अध्याय 18 से मिलती है। इसके अनुसार अहल-ए-किताब और मुशरिक (खुदा के अलावा किसी अन्य को पूज्य मानने वाला) दोनों ही काफिर हैं और ये सभी जीवों (मखलूक) से बदतर हैं। अपने अनुयायियों को इन्हें मारने (8:12,9:5, 47:4) लूटने (8:40, 8:41) और इनकी महिलाओं का अपहरण करने (4:21) के लिए उकसाया गया है। यह घृणा तर्कशील मुस्लिमों को इस्लाम से विमुख कर रही है।

इस्लाम में महिलाओं की स्थिति

निचले दर्जे की होने पर सभी विमुख मुस्लिमों को आपत्ति है। कुरान के अनुसार, ' अल्लाह ने मर्दों को औरतों पर फजीलत (प्रधानता) बख्शी है (4:34) इसलिए वह चाहे तो अपनी पत्नी को पीट सकता है।

एक पूर्व मुस्लिम का कहना है कि मुझे यह बात हमेशा परेशान करती थी कि इस्लाम में एक महिला की गवाही आधी क्यों है।

जामिया हमदर्द विश्वविद्यालय के इस्लामी अध्ययन विभाग में सहायक प्रोफेसर और देवबंद मदरसा के पूर्व छात्र वारिस मजहारी ने मीडिया से बातचीत में कहा है, '' भारत में पूर्व मुसलमानों की संख्या बढ़ रही है।''

इस वर्ष के आरंभ में जारी प्यू रिसर्च सेंटर के सर्वेक्षण के अनुसार 6 प्रतिशत भारतीय मुसलमानों ने स्वयं को अपने मजहब में विश्वास नहीं करने वाला बताया है।

अमेरिकी मुसलमान के रूप में पले-बढ़े 23 प्रतिशत लोग अब इस्लाम के साथ अपनी पहचान नहीं जोड़ते। 2015 में ब्रिटेन में एक ट्विटर अभियान में हजारों पूर्व मुसलमानों ने इस्लाम छोड़ने के कारणों को ट्वीट किया था।

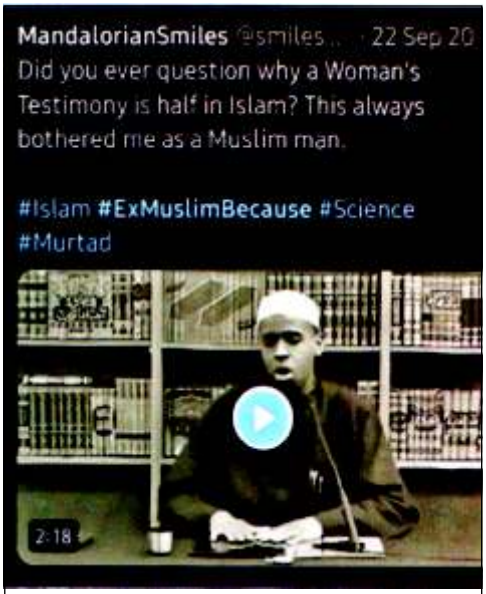

क्या आपने कभी सवाल उठाया कि इस्लाम में एक महिला की गवाही आधी क्यों है? मुझे बतौर मुस्लिम इस बात ने हमेशा परेशान किया।

(पांचजन्य 12 दिसम्बर,2021 के अंक में प्रकाशित नीरज अत्री के लेख 'मुस्लिम क्यों छोड़ रहे इस्लाम'के आधार पर)

अपनी जड़ों की ओर लौट रहे हैं लोग

बड़ी हस्तियां जिन्होंने पिछले समय हिंदू धर्म अपनाया-

एक- इंडोनेशिया सन् 1267 तक एक हिन्दू देश था। 1267 में विदेशी मुस्लिम व्यापारियों के प्रभाव में आकर तत्कालीन राजा और उसका परिवार मुस्लिम हो गया था। धीरे-धीरे जनता ने भी राज परिवार का अनुसरण किया। परन्तु अब लोग पुनः अपनी जड़ों की ओर, अपने मूल धर्म की ओर लौट रहे हैं।

इंडोनेशिया के राष्ट्रप्रमुख और प्रथम राष्ट्रपति सुकर्णो की तीसरी बेटी और इस देश की पांचवी राष्ट्रपति मेघावती सुकर्णोपुत्री की बहन **राजकुमारी दीया मुटियारा सुकुमावती सुकर्णोपुत्री** गत 26 अक्टूबर, 2021 को वापस हिन्दू धर्म में लौट गई। उनके हिन्दू धर्म में वापसी का उनके भाई-बहिनों तथा पुत्र ने स्वागत किया है।

दो- इससे पूर्व 17 जुलाई,2017 को इंडोनेशिया के ही जावा प्रांत की एक **राजकुमारी कंजेंग रादेन अयु महिंद्रनी कुस्विद्यांति परमासी** ने भी पुनः हिन्दू धर्म अपना लिया था। जावा में रहने वाले हजारों मुसलमानों ने फिर से हिन्दू धर्म में लौटना शुरु कर दिया है।

तीन- उत्तर प्रदेश शिया वक्फ बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष **वसीम रिजवी** ने इसी 6 दिसम्बर,2021 को घर वापसी करते हुए हिन्दू धर्म स्वीकार कर लिया है।

चार-केरल के फिल्मकार **अली अकबर** ने इस्लाम छोड़कर हिन्दू धर्म अपना लिया। अब उनका नाम है- राम सिम्हन। उनका कहना है कि उन्होंने जनरल रावत की हेलीकॉप्टर हादसे में मौत पर कुछ लोगों की प्रतिक्रिया से आहत होकर हिन्दू धर्म अपनाया।

पांच- दक्षिण भारत की अभिनेत्री **नयनतारा** ने वर्ष 2017 में ईसाई मजहब छोड़कर हिंदू धर्म अपनाया।

छः- गुल मोहम्मद- मुस्लिम परिवार में जन्में गुल मोहम्मद योगी आदित्यनाथ व उनके गुरु महंत अवैद्यनाथ से प्रभावित होकर गुलाबनाथ बने। अब वे नाथ सम्प्रदाय के प्रसिद्ध संत हैं।

सात- जूलिया रॉबर्ट्स- हॉलीवुड की प्रसिद्ध अभिनेत्री जुलिया रॉबर्ट्स ने 2010 में हिंदू धर्म अपनाया।

आठ- ईसाई परिवार में जन्मे अमेरिकी संगीतकार **जॉन** तथा अमेरिकी गायक **ट्रेवर** भी हिन्दू बन गए हैं।

नौ- लेखिका **एलिजाबेथ गिर्ल्बट** जब भारत दौरे पर थीं,उन्होंने हिंदू धर्म अपनाया।

दस- हास्य कलाकार **रसेल ब्रांड** ने हिंदू धर्म अपनाते हुए हिंदू रीति से विवाह किया।

हिन्दू धर्म छोड़कर गए लोग करें घर वापसी- भागवत

उत्तर प्रदेश के चित्रकूट में सम्पन्न 'हिन्दू एकता महाकुंभ' में संघ के सरसंघचालक डॉ.मोहन भागवत ने कहा है कि जो लोग धर्म छोड़कर चले गए थे, वे वापस मूल धर्म में लौटें। उन्होंने कहा कि भय ज्यादा दिन बांधकर नहीं रख सकता हम लोगों को जोड़ेंगे।

डॉ.भागवत ने उपस्थित सभी से संकल्प कराया कि 'मैं किसी भी हिन्दू भाई को धर्म विमुख नहीं होने दूँगा और जो भाई धर्म छोड़कर चले गए हैं, उनकी घर वापसी करवाऊँगा तथा उसे अपने परिवार का हिस्सा मानूंगा।'

तुलसीपीठाधीश्वर पद्मविभूषण स्वामी रामभद्राचार्य की पहल पर 14 दिसम्बर से आरंभ तीन दिवसीय 'हिन्दू एकता महाकुंभ' में श्रीश्री रविशंकर, ज्ञानानंदजी, सद्गुरु ब्रह्मेश्वरानंद, महानिर्वाणी अखाड़ा से रविन्द्रपुरी, आचार्य लोकेश मुनि, साध्वी ऋतंभरा, रमेश भाई ओझा, निंबार्काचार्य श्रीजी महाराज सहित देश के विभिन्न क्षेत्रों से आए संत–महात्मा बड़ी संख्या में उपस्थित थे। सभी संतजन हिन्दू एकता के लिए काफी गंभीर दिखाई दिए। कार्यक्रम का आरंभ शंखनाद और वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच दीप प्रज्ज्वलन से हुआ।

श्री वासुदेवानंद सरस्वती महाराज ने कहा कि हिंदुओं को बिखरना नहीं चाहिए। हमें संतरा नहीं खरबूजा दिखना चाहिए। बाहर भले ही धारियां हों लेकिन भीतर से एक हों। कार्यक्रम को श्रीश्री रविशंकर व अन्य प्रमुख संतों ने भी संबोधित किया।

डॉ. मोहन भागवत द्वारा चित्रकूट में कराई गई प्रतिज्ञा–

' मैं हिन्दू संस्कृति का धर्म योद्धा मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्रीरामजी की संकल्प स्थली पर सर्वशक्तिमान परमेश्वर को साक्षी मानकर संकल्प लेता हूं कि, मैं अपने पवित्र हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृति एवं हिन्दू समाज के संरक्षण, संवर्धन एवं सुरक्षा के लिए आजीवन कार्य करूंगा। मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि किसी भी हिन्दू भाई को हिन्दू धर्म से विमुख नहीं होने दूंगा तथा जो भाई धर्म छोड़कर चले गए हैं उनकी भी घर वापसी के लिए कार्य करूंगा एवं उन्हें परिवार का हिस्सा बनाऊंगा। मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि हिन्दू बहनों की अस्मिता, सम्मान और शील की रक्षा के लिए मैं सर्वस्व अर्पण करूंगा। मैं जाति, वर्ग, भाषा, पंथ के भेदभावों से ऊपर उठकर अपने हिन्दू समाज को समरस, सशक्त और अभेद्य बनाने के लिए पूरी शक्ति से कार्य करूंगा। भारत माता की जय'।

जन्मदिवस (12 जनवरी) पर विशेष

स्वराज के लिए स्वामी विवेकानन्द की आध्यात्मिक प्रेरणा

● **डॉ. अलका अग्रवाल**

स्वराज का अर्थ है, अपना या स्वयं का शासन। इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग स्वामी दयानंद ने किया था । उन्होंने नारा दिया ' सुराज कभी स्वराज का स्थान नहीं ले सकता '। उनके बाद स्वाधीनता आंदोलन के दौरान तिलक ने उद्घोष किया, ' स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा '। हमारे देश में चिंतकों ने स्वराज का सीमित नहीं ,वरन अत्यधिक व्यापक अर्थ ग्रहण किया है। स्वराज केवल राजनीतिक स्तर पर विदेशी शासन से मुक्त हो पाना मात्र नहीं है,वरन सांस्कृतिक और नैतिक स्वाधीनता का विचार भी इसमें निहित था।

इस स्वराज के लिए आध्यात्मिक प्रेरणा प्रदान करने का कार्य, स्वामी विवेकानन्द और महर्षि अरविंद जैसी आध्यात्मिक चिंतकों ने किया था। यहां हम स्वामी विवेकानन्द के विचारों में आध्यात्मिक प्रेरणा देखने का प्रयास करेंगे। स्वामी विवेकानन्द ने कभी भारत के स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा नहीं लिया था क्योंकि वे मूल रूप से संन्यासी थे। वे प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने भारत के आध्यात्मिक राष्ट्रवाद और राष्ट्रवाद के धार्मिक सिद्धांत का प्रतिपादन किया,

स्वामी जी कहते थे – यदि व्यक्ति को आत्म-विश्वास के लिए प्रेरित किया जाए, उसे साहसी बनाने का प्रयास किया जाए तो उसके अन्दर सोया हुआ 'ब्रह्म भाव' भी जागृत हो जाता है । इसलिए उनके मूल मंत्र 'उत्तिष्ठत, जाग्रत, प्राप्य वरान्निबोधत' ने भारतीयों में शक्ति का संचार किया।

जो हमारे स्वराज के लिए आध्यात्मिक प्रेरणा प्रमाणित हुआ। वे मानते थे कि धर्म, व्यक्ति और राष्ट्र दोनों को ही शक्ति देता है और भविष्य में धर्म ही भारत के राष्ट्रीय जीवन का मेरुदण्ड बनेगा। उन्होंने भारत को अगले 50 वर्ष तक उसे एकमात्र ईश्वर मानकर उसकी आराधना का आह्वान भी किया। वे मानते थे कि प्रत्येक राष्ट्र के जीवन में एक प्रधान तत्व होता है जिस पर अन्य सभी तत्व केंद्रित होते हैं और भारत का वह प्रधान तत्व धर्म है। भारत में प्राचीन काल से ही धर्म आधारित राज्य को स्वीकृति मिली है, तथापि ध्यातव्य है कि भारत में हमेशा से धर्म व्यापक और विस्तृत अर्थ में प्रयुक्त हुआ है,संकीर्ण या सांप्रदायिक अर्थ में नहीं। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में स्वामी विवेकानन्द का योगदान वैसा ही माना जा सकता है जैसा फ्रांस की क्रांति में रूसो का।

प्राचीन काल से ही भारत में राजनीतिक चिंतन को धर्म और नैतिकता से पृथक नहीं किया गया।

स्वामी विवेकानन्द में मानवतावाद का साकार रूप दिखाई देता है, जब वे मानते हैं कि सभी मनुष्य ईश्वर की जीवित प्रतिमा हैं और जब वे कहते हैं कि मैं दरिद्र नारायण का उपासक हूँ, जब वे ऐसा कह रहे हैं तो गीता से पूरी तरह प्रभावित दिखाई देते हैं, जिसमें कहा गया है कि ' न मुझे राज्य की कामना है न स्वर्ग की और न ही मोक्ष की । त्रस्त प्राणियों के दुख का नाश हो, यही मेरी कामना है।'

स्वामी विवेकानन्द मानते हैं कि भारत में धर्म ही राष्ट्रीय जीवन के संगीत का मूल स्वर है।

भारत के जीवन में प्रथम स्थान धर्म का रहा है और उसके बाद ही अन्य विषय आते हैं । भारत में धर्म ने हमेशा से महान प्रेरक शक्ति का कार्य किया है । वे मानते थे 'धर्म का सार शक्ति है । जो धर्म हृदय में शक्ति का संचार नहीं करता , वह मेरी दृष्टि में धर्म नहीं है।' स्वराज के लिए इसी तरह की आध्यात्मिक प्रेरणा की तत्कालीन भारत को आवश्यकता थी। उनके इस चिंतन ने भारत की जनता में शक्ति का संचार किया और राजनीतिक, आर्थिक , सामाजिक असमानता के विरुद्ध जनता उठ खड़ी हुई। उनके द्वारा शुरू किया गया आध्यात्मिक जागरण, राजनीतिक जागरण का कारण बना। जिसने समाज के माध्यम से , राष्ट्र के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यही कारण है कि उन्हें बंगाल के राष्ट्रवाद का 'आध्यात्मिक पिता ' कहा जाता है। जिस समय भारत उदासीनता, निष्क्रियता और निराशा में डूबा हुआ था, उस समय विवेकानन्द ने जनता में शक्ति और निर्भयता का संचार किया। तिलक, अरविंद और सावरकर पर विवेकानन्द का आध्यात्मिक प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है । देश में जनजागृति लाने के लिए उन्होंने 'प्रबुद्ध भारत' और 'उद्बोधन ' नामक दो पत्रों का प्रकाशन भी किया, जिसने जनसाधारण को आंदोलित भी किया था ।

उपनिषदों में 'अभिः' विशेषण का प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ है-निर्भय होना। इतने और ऐसे निर्भय होने पर ही मातृभूमि के प्रति कार्य की सिद्धि हो सकती है । स्वामी विवेकानन्द ने कहा था ' जब मुट्ठी भर अंग्रेज पूरे 30 करोड़ भारतवासियों पर शासन करते हैं तो उनकी इच्छाशक्ति समवेत हो जाती है, जबकि 30 करोड़ भारतीय अपनी इच्छाशक्ति को एक-दूसरे से पृथक रखते हैं। बस यही इस गुलामी का रहस्य है ।

वे कहते थे कि यदि व्यक्ति को आत्मविश्वास के लिए प्रेरित किया जाए, उसे साहसी बनाने का प्रयास किया जाए तो उसके अन्दर सोया हुआ 'ब्रह्म भाव' भी जागृत हो जाता है । इसलिए उनके मूल मंत्र 'उत्तिष्ठत ,जाग्रत, प्राप्य वरान्निबोधत' ने भारतीयों में शक्ति का संचार किया।

वर्तमान काल में भारत युवाओं का देश है। युवाओं को दिशा देने हेतु, भयमुक्त होकर देश के गौरव को बढ़ाने हेतु, हमें उनके विचारों की महती आवश्यकता है। उन्होंने लिखा था, भारत में राष्ट्रीय एकता बिखरी हुई आध्यात्मिक शक्तियों के एकीकरण से ही संभव होगी। इस प्रकार भारत के स्वराज के लिए स्वामी विवेकानन्द ने भारत को आध्यात्मिक प्रेरणा प्रदान की और भारत के आध्यात्मिक राष्ट्रवाद को सम्पूर्ण विश्व में पहचान प्राप्त हुई।

(लेखिका हिंदी की ख्यातनाम साहित्यकार हैं। राजस्थान में राजकीय महाविद्यालय की प्राचार्य रह चुकी हैं)

काशी विश्वनाथ धाम राष्ट्र को समर्पित

गंगा स्नान करने के पश्चात् भगवान विश्वनाथ पर चढ़ाने हेतु गंगाजल लेकर नवनिर्मित कॉरीडोर से गुजरते प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

प्राचीन नगरी काशी के विश्वनाथ मंदिर का विस्तार करते हुए एक नए रूप में निर्मित 'काशी विश्वनाथ धाम' का लोकार्पण प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गत 13 दिसम्बर को किया। लोकार्पण करते समय श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा कहे गए शब्द अत्यंत महत्वपूर्ण हैं तथा देश की दिशा और भविष्य की ओर इशारा करने वाले हैं। उन्होंने कहा, ' काशी विश्वनाथ धाम का लोकार्पण भारत को एक निर्णायक दिशा देगा और एक उज्जवल भविष्य की ओर ले जाएगा।' काशी सम्पूर्ण देश के सामने धर्म और विकास के एक 'मॉडल' के रूप में सामने आया है।

काशी विश्वनाथ भगवान शिव के विभिन्न निवासों में से एक होने के कारण विशेष धार्मिक एवं आध्यात्मिक महत्व का स्थान है। काशी का ज्योतिर्लिंग देश के 12 ज्योतिर्लिंगों में सबसे महत्वपूर्ण है, जहां लाखों श्रद्धालु प्रतिवर्ष दर्शनार्थ आते हैं।

काशी के महत्व और प्राचीनता के बारे में पश्चिमी विद्वान मार्क ट्वेन ने लिखा है,'' बनारस (वाराणासी-काशी) इतिहास से भी पुराना है।''

काशी में विदेशी आक्रांताओं द्वारा किए गए एक हजार वर्ष के अन्याय को निर्माण और सृजन के माध्यम से

यहाँ औरंगजेब आता है तो शिवाजी उठ खड़े होते हैं। अगर कोई सालार मसूद इधर आता है तो राजा सुहेलदेव जैसे वीर योद्धा उसे हमारी एकता की ताकत का अहसास करा देते हैं।

समाप्त करते हुए प्रधानमंत्री श्री मोदी ने मंदिर के सदियों पुराने गौरव को फिर से स्थापित किया है।

प्रधानमंत्री के उद्बोधन के विशेष अंश

● विश्नाथ धाम प्रतीक है हमारे भारत की सनातन संस्कृति का। यह प्रतीक है हमारी आध्यात्मिक आत्मा का। यह प्रतीक है भारत की प्राचीनता का, परंपराओं का, भारत की ऊर्जा का, गतिशीलता का। यहाँ आपको अतीत के गौरव का अहसास होगा।

● काशी तो अविनाशी है। काशी में एक ही सरकार है जिनके हाथ में डमरू है, उनकी सरकार है।

● कितनी ही सल्तनतें उठी और मिट्टी में मिल गई, फिर भी काशी बना हुआ है।

● आतताइयों ने इस नगरी पर आक्रमण किए, इसे ध्वस्त करने के प्रयास किए, औरंगजेब के अत्याचार, उसके आतंक का इतिहास साक्षी है, जिसने सभ्यता को तलवार के बल पर बदलने की कोशिश की।

● यहाँ औरंगजेब आता है तो शिवाजी उठ खड़े होते हैं। अगर कोई सालार मसूद इधर आता है तो राजा सुहेलदेव जैसे वीर योद्धा उसे हमारी एकता की ताकत का अहसास करा देते हैं।

● हर भारतवासी की भुजाओं में वो बल है, जो अकल्पनीय को साकार कर देता है। हम तप जानते हैं, तपस्या जानते हैं, देश के लिए दिन-रात खपना जानते हैं, चुनौती कितनी ही बड़ी क्यों न हो, उसे परास्त कर सकते हैं।

विध्वंस और पुनर्निर्माण की गाथा

काशी विश्वनाथ मंदिर को अतीत में कई बार ध्वस्त किया गया। इसका पुनर्निर्माण भी होता रहा।

सन् 1194 में तुर्क हमलावर मोहम्मद गोरी के सहायक कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा तोड़े गए मंदिर का पुनर्निर्माण गुजरात के सेठ वास्तुपाल द्वारा कराया जाना माना जाता है। 14 वीं सदी में जौनपुर के महमूद शाह शर्की ने मंदिर को क्षतिग्रस्त कर दिया था, जिसे 1585 में टोडरमल व पं.नारायण भट्ट द्वारा ठीक कराया गया। 1632 में शाहजहां के आदेश से इस मंदिर को तोड़ने के लिए मुगल सेना आई थी, परन्तु हिन्दुओं के प्रबल प्रतिरोध के कारण वह सफल नहीं हो पाई।

18 अप्रैल, 1669 को औरंगजेब ने विश्वनाथ मंदिर तोड़ने का फरमान (आदेश) दिया। यह फरमान कोलकाता की एशियाटिक लाइब्रेरी में आज भी देखा जा सकता है। उस समय के लेखक साकी मुस्तइद खाँ ने अपनी पुस्तक 'मासीदे आलमगिरी'में लिखा है– ''औरंगजेब के आदेश पर यहां का मंदिर तोड़कर एक मस्जिद बनाई गई। 2 सितंबर, 1669 को औरंगजेब को सूचना दी गई कि मंदिर तोड़ने का काम पूरा हो गया।'' औरंगजेब ने प्रतिदिन हजारों ब्राह्मणों को मुसलमान बनाने का आदेश भी पारित किया था।

लगभग सौ वर्ष पश्चात् सन् 1777 में ग्वालियर की महारानी अहिल्या बाई ने काशी विश्वनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार कराया। 1835 में पंजाब के सिख महाराजा रणजीत सिंह ने मंदिर के शिखर पर सोने की परत चढ़वाई तथा नेपाल के महाराजा ने विशाल नंदी–प्रतिमा स्थापित कराई।

और अब, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल में 'विश्वनाथ धाम' के रूप में न केवल मंदिर का विस्तारीकरण हुआ है, वरन माँ गंगा से सीधे भगवान विश्वनाथ तक जाने का शानदार गलियारा बनाते हुए पूरे मंदिर परिसर को भव्य स्वरूप देने का ऐतिहासिक कार्य हुआ है।

ऐसा है नया विश्वनाथ धाम

पहले भगवान विश्वनाथ का दर्शन करने के लिए संकरी और कई बार तो गंदगी भरी गलियों से होकर जाना पड़ता था। मंदिर में भी स्थान कम था। माँ गंगा से सीधे मंदिर तक बनाए गए कॉरिडोर (गलियारा) से युक्त विश्वनाथ धाम अब 5 लाख वर्ग फीट में फैला है, जबकि इससे पहले मात्र 3 हजार वर्गफीट तक सीमित था।

मंदिर का मुख्य भाग लाल बलुआ पत्थर से बनाया गया है। इसमें 32 फीट ऊँचे और 40 फीट चौड़े चार बड़े–बड़े किलेनुमा दरवाजे लगाए गए हैं। चारों तरफ 80 फीट लंबा एवं 40 फीट चौड़ा प्रदक्षिणा (परिक्रमा) पथ बनाया गया है, जो कि 157 जोड़ी खंभों पर बना है। इस परिक्रमा मार्ग में संगमरमर के 22 शिलालेख हैं जिन पर काशी की महिमा का वर्णन है।

परिसर (कॉरिडोर) में यात्री सुविधा केन्द्र, तीन विश्रामालय, वैदिक संस्कृति केन्द्र, आध्यात्मिक पुस्तक केन्द्र, संग्रहालय, बहुउद्देशीय हॉल, जलपान गृह, पुजारी विश्रामालय आदि बनाए गए हैं।

नवनिर्मित विशाल मंदिर चौक में अब एक समय में 50 हजार श्रद्धालु एकत्रित हो सकते हैं। परिसर में भारत माता, आदि शंकराचार्य तथा महारानी अहिल्याबाई की प्रतिमाएं लगाई गई हैं।

गंगा से मंदिर तक बने चौड़े गलियारे का निर्माण आसान नहीं था। वहां पूर्व में बने हुए 315 भवनों–दुकानों के मालिकों को पर्याप्त मुआवजा देकर संतुष्ट किया गया। इनमें 700 परिवार व दुकानदार रह रहे थे। इन भवनों–दुकानों को हटाने पर निकले 27 मंदिरों को भी पुनर्स्थापित किया गया है। इस परियोजना के प्रथम चरण में 339 करोड़ रुपयों का खर्च आया है।

अब माँ गंगा में डुबकी लगाने के बाद सीधे एक चौड़े रास्ते से मंदिर जाना संभव हो गया है।

गांव-गांव बलिदान हुए आजादी के परवाने इतिहास के पन्नों तक उन्हें लाना ही अमृत महोत्सव

आजादी के आंदोलन में लाखों माताओं की गोद सूनी हुई, लाखों बहनों से भाई की कलाई छिनी, ऐसे कई बलिदानियों को इतिहास के पन्नों में जगह ही नहीं मिल पाई। आजादी के 75वें वर्ष पर मनाए जा रहे अमृत महोत्सव में गांव-गांव के ऐसे बलिदानियों के परिवारों को ढूंढकर उनका अभिनंदन किया जाए ताकि उन परिवारों की तथा हमारी पीढ़ियां इस बात पर गर्व कर सकें कि उनके पुरखों ने देश के स्वाधीनता आंदोलन में योगदान दिया था। यह विचार भारतीय इतिहास संकलन समिति के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री बालमुकुन्द पाण्डे ने मंगलवार को उदयपुर में 'मेवाड़-वागड़ में आजादी की गूंज (1818-1947)' विषयक संगोष्ठी में व्यक्त किए।

जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ के सभागार में 21 दिसम्बर को आयोजित इस एक दिवसीय संगोष्ठी में जहां मेवाड़-वागड़ के स्वाधीनता सेनानियों के स्वाधीनता संग्राम में योगदान पर चर्चा हुई वहीं, दिवंगत सेनानियों का स्मरण करते हुए परिवारजनों का अभिनंदन किया गया।

मुख्य अतिथि के रूप में श्री पाण्डे ने कहा कि सम्पूर्ण भारतवर्ष कभी पराधीन नहीं रहा, भारत के लोग हर वक्त संघर्षरत रहे, कभी मन से गुलामी को स्वीकार ही नहीं किया। चाहे वनवासी हों, गिरवासी हों, किसान हों, दलित हों, यहां तक कि संन्यासी हों, सभी ने अपने-अपने स्तर पर 'स्व' अर्थात् स्वाभिमान के जागरण का अभियान जारी रखा, तभी हमारी संस्कृति संरक्षित रह सकी और आगे की पीढ़ियों तक संघर्ष की यह ऊर्जा स्थानांतरित होती रही।

स्वाधीनता सेनानियों के परिवारजनों का सम्मान

इतिहास लेखन में स्वाभिमान के बजाय अपमान की घटनाओं को लिखा गया। उन्होंने वास्को-डी-गामा का उदाहरण देते हुए कहा कि पुस्तकों में यह पढ़ाया जाता रहा कि उसने भारत को खोजा, इसका मतलब क्या भारत पहले नहीं था। जबकि, हकीकत यह है कि वास्को-डी-गामा खुद लिखता है कि वह एक गुजरात के व्यापारी के साथ पहली बार भारत पहुंचा। अंग्रेज भी व्यापार की नीति से नहीं बल्कि अपनी कॉलोनी स्थापित करने और ईसाइयत के प्रचार के उद्देश्य से आए थे।

श्री पाण्डे ने 1857 के आंदोलन को आध्यात्मिक आंदोलन की संज्ञा देते हुए कहा कि यह 'स्व' के जागरण का आंदोलन था, उस आंदोलन में साढ़े तीन लाख लोग बलिदान हुए। 1911 तक का आंदोलन 'स्व' के जागरण का आंदोलन बना रहा, उसके बाद इसने राजनीतिक रूप लिया। पाण्डे ने कहा कि इतिहासकारों ने भी न्याय नहीं किया और स्वाधीनता के कई परवानों को पन्नों पर नहीं उकेरा। पाण्डे ने आह्वान किया कि आज के इतिहासकार आजादी के इस अमृत महोत्सव पर ऐसे ही स्वातंत्र्य वीरों को उजागर करें, उनके परिवारों को अपनी लेखनी से मान दें ताकि उनका बलिदान गुमनामी से बाहर आ सके।

कार्यक्रम में गोविन्द गुरु के पौत्र महंत सतीश गिरि, भगत आंदोलन से जुड़े वासुदेव महाराज, मोतीलाल तेजावत की पुत्रवधु, रघुनाथ पालीवा के पौत्र प्रतीक पालीवाल, तख्त सिंह भटनागर के भतीजे कैलाश भटनागर, सुजानमल जैन के पुत्र ललित जैन, रामचंद्र बागोरा के परिवारजन उपस्थित थे। उन्हें सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति प्रो. एसएस सारंगदेवोत ने कहा कि सत्य को आगे लाए बिना शिक्षा अधूरी है।

समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के चित्तौड़ सह प्रांत प्रचारक श्री मुरलीधर ने वागड़ के आजादी के लोक गीत 'नी मानूं नी मानूं भूरेटिया नी मानूं' की पंक्तियां दोहराते हुए कहा कि भारत ने मोहम्मद बिन कासिम से ओसामा बिन लादेन तक किसी को स्वीकार नहीं किया। उन्होंने कहा कि स्वराज-स्वदेशी-स्वधर्म की त्रिवेणी है हमारी आजादी।

मुख्य वक्ता गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय नोएडा के पूर्व कुलपति प्रो. भगवती प्रसाद शर्मा ने कहा कि शोधपत्रों में भारत के इतिहास के गौरवशाली तथ्य हैं, लेकिन वे शोधपत्र पुस्तकालयों तक ही सीमित हैं, जब तक वे रेफरेंस व टेक्स्टबुक के रूप में नहीं आएंगे तब तक भारतीय संस्कृति का गौरवशाली इतिहास सामने नहीं आ पाएगा। ●

जनरल रावत की मौत पर खुशियां मनाने वाले भी हैं इस देश में

भारत के पहले सीडीएस जनरल रावत की मृत्यु पर पूरा देश सकते में आ गया था। पूरा देश शोक में डूबा था। कई लोगों ने अपनी जन्मदिन की पार्टी, विवाह वर्षगांठ या अन्य अवसर पर भोज के कार्यक्रम रद्द कर दिए। इन लोगों ने कहा कि जब पूरा देश दुखी था तो हम खुशियां कैसे मनाते?

परन्तु इस देश में ऐसे भी कुछ लोग हैं जिन्होंने जनरल रावत के निधन पर खुशियां मनाई। इनमें पाकिस्तान के साथ आस्था रखने वाले कुछ मुसलमान ही नहीं हैं, कई हिन्दू सिरफिरे भी हैं। इस दुखद घड़ी में खुशी मनाने वाले ये वे लोग हैं जो 'मोदी' विरोधी हैं। इसलिए ये लोग उन सबके विरोध में हैं जो देश को मजबूत, प्रभावशाली और सुरक्षित बनाने में मोदी के साथ हैं। जनरल बिपिन रावत को भी ये लोग इसी श्रेणी में शामिल करते थे।

संजना रावल ने ट्वीट किया– 'पुलवामा हमले का मास्टरमाइंड टपक गया'। इस ट्वीट को मध्यप्रदेश कांग्रेस सेवादल के ज्वाइंट कोऑर्डिनेटर अतुल दुबे ने रिट्वीट किया है।

कई किए गए गिरफ्तार

राजस्थान के टोंक निवासी एक युवक जावाद खान द्वारा सोशल मीडिया पर जनरल की मृत्यु पर गलत टिप्पणी करने पर पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है।

जनरल बिपिन रावत की मृत्यु पर अपने फेसबुक पेज पर अपमानजनक टिप्पणी करने वाले गुजरात के एक 44 वर्षीय व्यक्ति को अहमदाबाद पुलिस ने गिरफ्तार किया है।

जम्मू-कश्मीर के उधमपुर स्थित सरकारी महिला कॉलेज के पूर्व प्रोफेसर

को भी ऐसी ही आपत्तिजनक टिप्पणी करने पर गिरफ्तार किए जाने का समाचार है। राजोरी में इसी तरह के मामले में एक दुकानदार को हिरासत में लिया गया।

फिल्म निर्माता अली अकबर ने उठाया बढ़ा कदम

जनरल बिपिन रावत के निधन पर खुशियां व्यक्त करने वाले लोगों को तगड़ा झटका दिया है केरल के फिल्म निर्माता अली अकबर ने। उन्होंने लोगों की ऐसी प्रतिक्रिया से आहत होकर हिंदू धर्म अपनाने का निर्णय लिया। जनरल रावत की मौत के समाचार पर सोशल मीडिया पर कुछ लोगों ने हंसने की इमोजी बनाई थी, अली अकबर इससे दुखी थे। अली अकबर ने कहा, ''किसी भी मुसलमान नेता ने ऐसे लोगों के खिलाफ मुंह नहीं खोला और इस तरह की पोस्ट नहीं करने के लिए नहीं कहा। केरल में इस्लामिक आंदोलन अब इस्लामिक नहीं रह गया है। वे लोग केरल को एक इस्लामी राज्य बनाना चाहते हैं।''

अली अकबर ने हिंदू धर्म अपनाते हुए अपना नाम 'राम सिम्हन' रख लिया है। केरल में हिंदू धर्म अपनाने वाले पहले मुसलमान ने अपना नाम 'राम सिम्हन' रखा था।

दिया सामाजिक समरसता का संदेश

क्षत्रिय युवक संघ का हीरक जयंती समारोह

केसरिया रंग में रंगा जयपुर

क्षत्रिय युवक संघ के जयपुर में आयोजित हीरक जयंती समारोह में 22-23 दिसम्बर को लाखों की संख्या में समाज बन्धु पहुँचे। समारोह में केसरिया ध्वज के नीचे जहां देश-धर्म के लिए मरने-मिटने का संकल्प लिया गया वही सामाजिक समरसता का संदेश भी दिया गया। मंच से कहा गया कि असली क्षत्रिय वह है जो अपनी आन, बान और स्वाभिमान के साथ... दलित व पिछड़ों को बचाने के लिए तैयार रहता है।

प्रताप फाउंडेशन के संयोजक तथा युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक श्री महावीर सिंह सरवड़ी ने दूल्हे को घोड़ी से उतारने को झूठी शान बताया और कहा कि वे भी ईश्वर की संतान हैं और हम भी उसी ईश्वर की संतान हैं।

इस भव्य आयोजन से जुड़े लोगों का आभार प्रकटीकरण के कार्यक्रम में युवक संघ के संरक्षक श्री भगवान सिंह रोलसाहबकर ने सफाई कर्मियों का सम्मान किया और कहा कि ये लोग हमारे परिवार के ही हैं, इन्होंने एक माह तक परिवार के लोगों की तरह कार्य किया। हम सब भगवान की संतान हैं। युवक संघ के प्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बेण्याकाबास व कई वरिष्ठ स्वयंसेवकों ने सफाई कर्मियों के साथ बैठकर प्रेमपूर्वक भोजन किया। उन्होंने इस अवसर पर कहा कि किसी भी व्यक्ति के साथ भेदभाव ईश्वर की संतान के साथ भेदभाव है।

75 वर्ष पहले स्व.श्री तनसिंह ने समाज में संस्कार निर्माण तथा क्षात्र धर्म की महत्ता बताने के उद्देश्य से क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की थी। समारोह में आकर्षण का केन्द्र केसरिया पगड़ियों से सजे युवा और केसरिया ओढ़नी ओढ़े मातृशक्ति थी।

सामाजिक समरसता का प्रेरक प्रसंग

जरूरतमंद परिवार का संबल बनी सेवा भारती

'सेवा परमो धर्मः' के भाव से कार्यरत सेवा भारती का एक अनुकरणीय उदाहरण पिछले दिनों कुचामन सिटी में देखने को मिला। स्टेशन रोड स्थित स्टेडियम के पास कच्ची बस्ती में जोगी समाज के कुछ परिवार रहते हैं। इन्हीं में से एक परिवार में पिछले दिनों एक बच्ची के पिता का निधन हो गया, परिवार के सामने बिटिया के तय विवाह में आर्थिक संकट खड़ा हो गया।

संघ कार्यकर्ताओं द्वारा यह बात द्वारा सेवा भारती तक पहुँची तो सेवा भारती ने न केवल विवाह ही सम्पन्न नहीं कराया बल्कि परिवार का हौंसला बढ़ाते हुए बिटिया को आभूषण, बर्तन, कपड़े सहित जरूरत का अन्य घरेलू सामान भी उपलब्ध कराया।

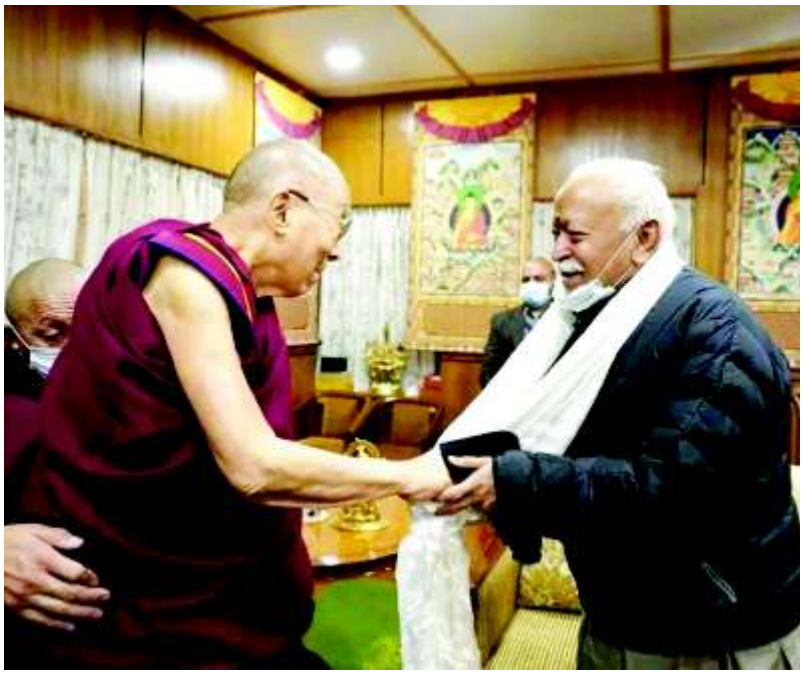

सरसंघचालक डॉ. भागवत की हिमाचल प्रदेश में परम पावन दलाई लामा से सौहार्दपूर्ण भेंट

भारत में निर्मित टीके को मान्यता न मिले, इसके लिए कई लोगों ने कोशिश की- मुख्य न्यायाधीश रमण

अपनी महान उपलब्धि को कम आंकना मानसिक गुलामी

भारत के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति एनवी रमण ने कहा है कि मेड इन इंडिया (भारत में निर्मित) कोरोना की वैक्सीन (कोरोना-टीका) 'कोवैक्सीन' को विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) द्वारा मान्यता देने से रोकने के लिए भारत के भीतर के कई लोगों ने कोशिश की थी। कोवैक्सीन को अपने ही लोगों ने बदनाम करने का अनुचित प्रयास किया। न्यायमूर्ति रमण हैदराबाद में 25 दिसम्बर को आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि एक ओर विभिन्न अध्ययनों में स्वदेशी वैक्सीन को प्रभावी पाया गया, वहीं कई लोगों ने इसकी इसलिए आलोचना की, क्योंकि इसे देश में बनाया गया था। कुछ ने इसके खिलाफ डब्ल्यूएचओ से भी शिकायत की थी।

न्यायमूर्ति रमण ने अपने लोगों की महान उपलब्धियों के बावजूद उन्हें कम आंकने की प्रवृत्ति को गुलामी की मानसिकता बताते हुए इसे त्यागने को कहा। उन्होंने, माँ, मातृभाषा और मातृभूमि के सम्मान को जारी रखने पर जोर दिया।

जांचें कि आप कितने ज्ञानवान हैं?

नीचे दिए गए 10 प्रश्नों के उत्तर बताइए। अपना ज्ञान स्तर निम्नानुसार मानें –
सामान्य–यदि 5 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं।
श्रेष्ठ– यदि 8 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं।
उत्तम – यदि सभी उत्तर सही देते हैं।

1. लंका में सीता माता का पता हनुमान जी को किसने बताया?
2. महाभारत युद्ध के पूर्व ही गदाधर भीम के किस पौत्र का वध श्रीकृष्ण ने किया?
3. वियतनाम का प्रमुख धर्म कौन सा है?
4. भगवान राम की जन्मस्थली अयोध्या किस नदी के तट पर बसी है?
5. भगवान विष्णु के अवतार परशुराम जी के पिता का क्या नाम था?
6. चन्द्रगुप्त मौर्य के बाद किस हिन्दू सम्राट ने सम्पूर्ण भारत को संगठित कर सामर्थ्यशाली बनाया?
7. किस वेद में उड़ने वाले विमानों का विस्तृत विवरण आया है?
8. 'खूब लड़ी मर्दानी' कविता किस महान वीरांगना के लिए लिखी गई?
9. अभेद लोहागढ़ किला राजस्थान के किस जिले में स्थित है?
10. महाराजा सूरजमल की वीरता और पराक्रम का वर्णन सूदन कवि ने किस ग्रंथ में किया है?

उत्तर – 1. विभीषण 2. बर्बरीक 3. बौद्ध धर्म 4. सरयू 5. महर्षि जमदग्नि 6.सम्राट समुद्रगुप्त 7. ऋग्वेद 8. महारानी लक्ष्मीबाई 9. भरतपुर 10. सुजान चरित्र

असम का 'बिहू' पर्व

● बद्रीनारायण विश्नोई

सूर्य के दक्षिणायन से उत्तरायण गमन की भौगोलिक घटना के महत्व को समझकर हमारे देश के बड़े हिस्से में 14 जनवरी को मकर संक्रांति का त्योहार मनाया जाता है। इस दिन या इसके आसपास देश के कई अन्य भागों में यह त्योहार अपने-अपने सांस्कृतिक तौर-तरीकों के साथ अलग नामों से भी मनाया जाता है। इनमें शामिल हैं पंजाब की लोहड़ी, गुजरात व महाराष्ट्र का उत्तरायण, तमिलनाडु में पोंगल, बिहार-झारखंड आदि में 'खिचड़ी-पर्व', असम में 'बिहू' आदि।

तिब्बती और बर्मी परिवारों सहित देश के पूर्वोत्तर राज्य असम में इसे 'बिहू' के रूप में मनाते हैं। 'बि' का अर्थ 'पूछना' और 'हू' का अर्थ 'देना' के रूप में प्रचलित है। अर्थात् श्रद्धालु भगवान से शांति और समृद्धि के बारे में पूछते (मंगल-कामना) हैं। जिस पर भगवान उन्हें अच्छी फ़सल और सम्पन्नता का आशीर्वाद देते हैं। 'बिहू' असम की दिमासा जनजाति सहित पूरे असम में बहुत ही लोकप्रिय पर्व है।

भोगाली या माघ बिहु

मकर संक्रांति के समय (14 या 15 जनवरी को) असम में मनाया जाने वाला त्योहार 'माघ बिहु' या भोगाली बिहू 'भोग', आनन्द और समृद्धि का प्रतीक होने से इसे 'भोगाली' कहा जाता है। यह पर्व किसानों की फसल कटाई की उपज से जुड़ा हुआ है।

फसल कटाई के बाद उनके घर-आंगन सहित अन्न भंडार पूरे भरे रहते हैं। भोगाली बिहू एक सप्ताह तक चलता है। जिसमें पहले दिन (पूर्व संध्या) को 'उरुका' कहा जाता है। इस दिन श्रद्धालु नदी के किनारे या खुली ज़गह में धान की पुआल से एक अस्थायी छावनी बनाते हैं, जिसे 'भेलघर' कहा जाता है।

इस छावनी के पास चार बांस लगाकर, उस पर पुआल और लकड़ी से ऊंचे गुम्बज जैसा निर्माण करते हैं, जिसे 'मेजी' कहते हैं। गांव के सभी श्रद्धालु, भक्त आदि यहां अलाव जलाकर, रात्रि भोज और मंगल गान करते हैं। 'उरुका' के अगले दिन (दूसरे) लोग स्नानादि करके 'मेजी' जलाकर 'भोगाली बिहू' मनाते हैं। सभी भक्त, श्रद्धालु आदि 'मेजी' के चारों ओर एकत्र होकर, बिहू लोकगीत गाते हुए, मंगल कामना करते हैं। वे 'मेजी' को नारियल, सुपारी, चावल, तिल पीठा, लड्डू, फलादि भेंट करते हैं, ढोल बजाते और गीत के साथ लोकनृत्य भी करते हैं। लोग अग्नि देवता को नये अन्न का भोग चढ़ाकर, अपने लिए शांति और समृद्धि की कामना करते हैं। वे अपने यथेष्ट कार्यों की पूर्णता के लिए फलदार पेड़ों के बीच फेंकने के लिए अध-जली लकड़ी के टुकड़े लेकर वापस घर आते हैं। अपने घरों के आस-पास के सभी पेड़ों को बांस की पट्टियों या धान के तने से बांध देते हैं।

'बिहू' पर्व पर श्रीमन्त शंकरदेव का प्रभाव

असम के आध्यात्मिक पुरुष श्रीमन्त शंकरदेव ने बिहू में धार्मिक भावों को जोड़ा। शंकरदेव ने हरि और राम इन दो शब्दों का प्रवेश बिहू में कराया। वाद्ययंत्र जैसे ढोल की धुनों में भी बिहू के भक्तिभाव वाले रंगों का प्रवेश शंकरदेव के समय हुआ।

पौष संक्रांति या भोगाली बिहू के अवसर पर विभिन्न प्रकार के परम्परागत खेल भैंस-लड़ाई, बैल-दौड़ आदि पूरे दिन आयोजित किए जाते हैं।

उत्तरी असम (तिनसुकिया, शिवसागर, डिब्रूगढ़ आदि) में बिहू गाते हुए एक दूसरे के घरों में जाने की परम्परा रही है। परन्तु निचले असम (नलबाड़ी, बेरपेटा, गुवाहाटी आदि) में लोग किसी मैदान में एकत्र होते हैं। वहां विभिन्न बिहू पार्टियाँ आकर बिहू नृत्य व गायन का प्रदर्शन करती हैं। मोटे रूप से असम में एक वर्ष में तीन 'बिहू' पर्व मनाए जाते हैं। जिसमें बोहाग या रोंगाली बिहू मध्य अप्रैल में, काटी या कोंगाली बिहू मध्य अक्टूबर में तथा माघ या भोगाली बिहू जनवरी के मध्य (मकर संक्रांति के दिनों) में मनाया जाता है।

जहाँ ऊपरी असम में रोंगाली बिहू मनाने की ज्यादा परम्परा है, वहीं निचले असम में भोगाली बिहू ज्यादा मनाते हैं।

(लेखक युवा साहित्यकार और स्तम्भकार हैं)

पाथेय कण पाठक सम्मेलन में आप भी सहभागी बनें

इन दिनों राजस्थान के कई स्थानों पर 'पाथेय कण पाठक सम्मेलन' हो रहे हैं। आपके यहां ऐसे आयोजन की सूचना मिले तो उसमें अवश्य सहभागी बनें।

पाथेय कण राष्ट्रीय विचारों की एक जागरण पत्रिका है, जिसका उद्देश्य गांव-गांव में जागृत समूह तैयार करते हुए समाज का जागरण करना है।

विक्रम संवत् 2042 (22 मार्च, 1985) को इस पत्रिका का पहला अंक निकलता था। तब से निरंतर प्रकाशित होने वाली इस पत्रिका के अब तक 55 विशेषांक भी निकाले गए हैं। इन विशेषांकों में मातृशक्ति, मेवाड़, लोकदेवता, प्राचीन भारत का विज्ञान , ग्राम पुनर्रचना, क्रांति-कथा, सामाजिक समरसता, स्वदेशी जागरण, हिन्दुत्व, कोरोना काल में सेवा कार्य, राम मंदिर के लिए निधि समर्पण, स्वराज संघर्ष यात्रा आदि विषयों पर विशेषांक निकाले गए। वर्तमान में हर बार लगभग एक लाख प्रतियाँ छपती हैं।

पाठकों से अपेक्षा-

- समय-समय पर अपनी प्रतिक्रिया, विचार व सुझाव हमें वाट्सएप या ई-मेल से प्रेषित करें।
- स्वयं पढ़ने के बाद नगरों में अपने आस-पास के पाँच परिवारों को पढ़ने के लिए दें।
- ग्रामों में प्रमुख लोगों को एकत्रित कर पाथेय-कण का सामूहिक पठन करें।
- हर वर्ष अपने अतिरिक्त कम से कम एक सदस्य और बनाएं।
- अपने पास के जिस गाँव में पाथेय-कण नहीं जाता, उस गाँव में कम से कम एक बन्धु को सदस्य बनाएं।
- प्रकाशित विचार, समाचारों, पंचांग पर अपने आस-पास, कार्यालय, दुकान, चौपाल पर चर्चा करें।
- उपयोगी जानकारी को मंदिर व विद्यालय के फलक पर लिखें।

सदस्यों की तुलना में पाठकों की संख्या बढ़े

बीती 17 दिसम्बर को टोंक प्रचार विभाग के तत्वावधान में निवाई खण्ड में पाथेय कण पाठकों का सम्मेलन स्थानीय सरस्वती विद्या मंदिर में रखा गया। कार्यक्रम में बोलते हुए रा.स्व.संघ के सह क्षेत्र प्रचार प्रमुख श्री मनोज कुमार ने कहा कि पत्रिका के सदस्यों की अपेक्षा पाठकों की संख्या अधिक होनी चाहिए। यह एक विचार है जो गांव-ढाणियों के सभी श्रेणियों के पाठकों तक पहुँचना चाहिए। पाथेय कण में प्रकाशित विषय-वस्तु, उपयोगिता व वितरण आदि सुझावों के साथ श्री मनोज कुमार ने पाठकों से सार्थक चर्चा की।

टोंक जिला सह प्रचार प्रमुख श्री प्रेमप्रकाश शर्मा ने पाथेय कण को प्रत्येक पाठक तक पहुँचाने में डाकमित्रों की भूमिका पर अपने विचार रखे। डाक वितरक सर्व श्री कैलाश चंद धोबी, भगवान सहाय लक्षकार, मुकेश कुमार खंगार, लक्ष्मण मीणा, तुलसीराम, लोकेश मीणा का श्रीफल, पुस्तक, लेखनी देकर व अंगवस्त्र ओढ़ाकर सम्मान किया।

कार्यक्रम में स्थानीय पाठकों के अलावा सोशल मीडिया से जुड़े व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम से पूर्व 'वर्तमान में सोशल मीडिया का कलेवर और उपयोग' विषय पर भी विचार-विमर्श किया गया।

विजय दिवस की स्वर्ण जयंती पर लगाए लगभग 4 करोड़ प्रहार

1971 में पाकिस्तान पर भारत की विजय के दिवस 16 दिसम्बर को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रतिवर्ष शाखाओं पर 'प्रहार महायज्ञ' का आयोजन करता है।

इस वर्ष राजस्थान क्षेत्र के तीनों प्रांतों के 46 हजार 364 स्वयंसेवकों ने सुबह-सवेरे कड़ाके की ठंड में विभिन्न शाखाओं पर 3 करोड़ 73 लाख 48 हजार से ज्यादा प्रहार लगाए। व्यक्तिगत एक हजार से अधिक प्रहार लगाने वाले स्वयंसेवकों की संख्या 16 हजार 7 सौ 69 रही।

कुचामन सिटी के स्टेडियम में 16 दिसम्बर को एकत्र संघ के लगभग सात सौ स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए जोधपुर प्रांत प्रचार प्रमुख श्री पंकज कुमार ने कहा कि विजय दिवस वीरता और शौर्य का उदाहरण है।

प्रहार महायज्ञ

प्रांत	स्वयंसेवक	कुल प्रहार
चित्तौड़	22296	1,74,36,096
जोधपुर	11194	89,91,995
जयपुर	12874	1,09,20,579
कुल	**46,364**	**3,73,48,670**

कुटुम्ब प्रबोधन

संबंधों को जीने से मिलता है सुख

परिवार बहुत मूल्यवान इकाई है। गहरे संबंध और संस्कारों का नाम परिवार है। सुख संबंधों को जीने से मिलता है। यह कहना है राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक श्री नंदलाल का। उन्होंने 12 दिसम्बर को बांसवाड़ा के पाटीदार छात्रावास में कुटुम्ब प्रबोधन विषय पर बोलते हुए कहा–सुखी होना चाहते हैं तो भारतीय परिवार को देखना चहिए। कुछ लोगों को इकट्ठा करने से परिवार नहीं बनता। परिवार रिश्तों से बनता है। श्री नंदलाल ने कहा कि जन्म देने वाली मां पूजनीय है, परन्तु धरती माँ, तुलसी माँ, गंगा माँ और गौ माता का भी उतना ही महत्त्व है।

सामाजिक समरसता

बंधुता के बिना सामाजिक समरसता नहीं

पू.बाला साहब देवरस बचपन से ही सामाजिक समरसता के पक्षधर थे। वे अपने घर आए स्वयंसेवकों के साथ एक जैसा व्यवहार करते थे। बाला साहब कहते थे कि बंधुता के बिना सामाजिक समरसता नहीं हो सकती। समरसता किसी कानून से नहीं, संस्कार और व्यक्ति निर्माण से आती है। उक्त विचार पूर्व विधान सभा अध्यक्ष श्री शांतिलाल चपलोत ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तृतीय सरसंघचालक रहे बाला साहब की जयंती (11दिसम्बर) पर उदयपुर के सेवा भारती चिकित्सालय में आयोजित एक गोष्ठी में व्यक्त किए।

भारती पत्रिका, जयपुर

भारतीयता के जागरण में संस्कृत पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका – श्री नरेन्द्र ठाकुर

संस्कृति के उन्नयन तथा भारतीयता के जागरण में संस्कृत पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आने वाले समय में संस्कृत आधारित पत्र–पत्रिकाओं की संख्या बढ़ाने पर प्रयास होना चाहिए। उक्त विचार रा.स्व. संघ के अ.भा.सह प्रचार प्रमुख श्री नरेन्द्र ठाकुर ने संस्कृत की मासिक पत्रिका 'भारती' के मार्गशीर्ष अंक का विमोचन करते समय व्यक्त किए। भारतीय संस्कृति प्रचार संस्थान द्वारा प्रकाशित 'भारती' देश की एक मात्र संस्कृत में प्रकाशित होने वाली पत्रिका है जो पिछले 72 वर्षों से लगातार प्रकाशित हो रही है। 1950 में समाजसेवी बाबा साहब आप्टे और संस्कृत में मूर्धन्य विद्वान स्व.गिरिराज शास्त्री द्वारा यह प्रारम्भ की गई थी।

आदर्श विद्या मंदिर, रतनगढ़

गुमनाम क्रांतिकारियों पर लिखे 300 पोस्टकार्ड

विद्या भारती द्वारा संचालित श्री संचियालाल बैद माध्यमिक आदर्श विद्या मंदिर, रतनगढ़ के 300 विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने भारत की आजादी में योगदान देने वाले गुमनाम क्रांतिकारियों व 2047 के भारत के स्वरूप पर अपने विचार लिखकर पोस्टकार्ड के माध्यम से प्रधानमंत्री को भेजे। प्रधानाचार्य श्री दिनेश शर्मा ने बताया कि कार्यक्रम का आयोजन 'आजादी का अमृत महोत्सव' के अंतर्गत किया गया था।

श्री प्रकाश त्र्यंबक काले का निधन

अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के अ.भा. व्यवस्था प्रमुख श्री प्रकाश त्र्यंबक काले का 25 दिसम्बर को निधन हो गया। 60 वर्षीय प्रकाश जी पिछले कुछ समय से कैंसर से जूझ रहे थे। मूलतः नागपुर के रहने वाले प्रकाश जी बाल्यकाल से ही संघ के स्वयंसेवक थे। 1983 में प्रचारक जीवन की शुरुआत कर आपने विदर्भ, बुलढाणा, वाशिम और वर्धा में संघ के तहसील और जिला प्रचारक के रूप में कार्य किया। 1999 में आपको कल्याण आश्रम का दायित्व मिला।

कुशल संगठक और समर्पित कार्यकर्ता के रूप में आपने सैकड़ों लोगों को कल्याण आश्रम के कार्य से जोड़ा।

पाथेय कण की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

स्वराज्य निर्मात्री माता जीजाबाई

शील, शौर्य ध्येयनिष्ठा और वीरव्रत का पहला संस्कार माँ से ही प्राप्त होता है। मातृत्व का ऐसा ही उच्चतम आदर्श माता जीजाबाई का भी है। जीजाबाई सिंदखेड़ (महाराष्ट्र) के राजस्व अधिकारी जाधवराव की सुपुत्री थीं। मंदिरों को ध्वस्त करना, हिन्दुओं पर अत्याचार, दिन दहाड़े हिन्दू स्त्रियों का अपहरण मुगल राज्य में आम बात थी। जीजाबाई ने अपने पति शाहजी से कहा–'आखिर हम कब तक यों ही विदेशियों की चाकरी करते हुए अपमान का जीवन बिताते रहेंगे? शाहजी ने उत्तर दिया– 'चाहते तो हम भी यही हैं, कैसे करें यह समझ में नहीं आता।'

जवाब सुनकर जीजाबाई की सारी आशा अपने गर्भस्थ शिशु पर टिक गई। वे नित्य माँ भवानी से प्रार्थना करतीं कि–हे देवी! मुझे ऐसा पुत्र दे जो स्वराज्य की स्थापना करे। शिवनेरी के दुर्ग में उन्होंने एक तेजस्वी बालक शिवा को जन्म दिया।

जीजाबाई शिवाजी के बाल मन पर स्वदेश और स्वधर्म के संस्कार डालने का निश्चय कर वीर-रस की कहानियाँ, गीत, रामायण और महाभारत के साथ-साथ देशभक्ति की कथाएं सुनातीं। थोड़े बड़े हुए तो शिवाजी ने मावलों को अपना साथी बनाया। माता जीजाबाई और दादा कोण्डदेव की देखरेख में लिखना-पढ़ना, तीर चलाना, घुड़सवारी करना आदि की शिक्षा लेने लगे।

मात्र 13 वर्ष की आयु में शिवाजी ने हिन्दवी स्वराज्य स्थापित करने की प्रतिज्ञा कर भारत में फैले मुगल आक्रमणकारियों से एक लम्बा संघर्ष किया। अपने जीवन की परेशानियों को भूलते हुए जीजाबाई ने शिवाजी को ऐसी शिक्षा व संस्कार दिए जिनके कारण शिवाजी महाराज अपने जीवन काल में हिन्दवी स्वराज्य स्थापित कर सके।

बाल प्रश्नोत्तरी-10 के परिणाम

प्रथम 10 विजेताओं के नाम :

1. काव्या दाधीच, झोटवाड़ा, जयपुर
2. मनजीत नाथ चौहान,नाथद्वारा,राजसमंद
3. भानू डेलू, चौहटन, बाड़मेर
4. कामिया सांखला, बिहारी गंज, अजमेर
5. वेदांश सिंह, जगतपुरा, जयपुर
6. कार्तिक गर्ग, मिश्र मोहल्ला, सवाईमाधोपुर
7. जतिन प्रसाद शर्मा, श्रीविजयनगर, गंगानगर
8. सागर लिम्बा, सरदारपुरा, जोधपुर
9. रंजना खटीक, मावली, उदयपुर
10. अनामिका, मनोहर थाना, झालावाड़।

प्रथम 5 विजेताओं को पुरस्कार भेजे जा रहे हैं।

सही उत्तर – 1.(क) 2.(ख) 3.(ग) 4.(क) 5.(क) 6.(क) 7.(घ) 8.(ग) 9.(ख)10.(ख)

जानें रामायण के महिला पात्रों को

भारतीय जनजीवन में रामकथा का बड़ा गहरा संबंध है। रामकथा विभिन्न प्रसंगों और पात्रों से प्रेरणा देती रही है। आइए जानें रामायण के कुछ महिला पात्रों को –

कैकेयी – महाराजा दशरथ की तीसरी रानी और भरत की माता।

कौशल्या–मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की माता तथा महाराजा दशरथ की पहली पत्नी

मांडवी– माता सीता की चचेरी बहन जिसका विवाह श्रीराम के भाई भरत से हुआ।

उर्मिला –श्रीराम के छोटे भाई लक्ष्मण की पत्नी

श्रुतकीर्ति– श्रीराम के छोटे भाई शत्रुघ्न की पत्नी, माता सीता की चचेरी बहन

अहिल्या–महर्षि गौतम की पत्नी

शबरी – माता शबरी एक भील महिला थी। वनवास के समय श्रीराम ने उनका आतिथ्य स्वीकार कर उनके द्वारा प्रेमपूर्वक दिए कन्दमूल फल तथा झूठे बेर खाए।

अंजना– वानरराज केसरी की पत्नी तथा हनुमानजी की माता

रूमा – वानरराज सुग्रीव की पत्नी

तारा – बाली की पत्नी तथा अंगद की माता

कुकिंग टिप्स

सब्जी का स्वाद और बढ़ेगा

भरवां सब्जी बनाते समय मसाले में थोड़ी सी भूनी मूंगफली का चूरा मिलाने से सब्जी बहुत ही स्वादिष्ट बनती है।

बच्चों के साथ रखें इन बातों का ध्यान

कम्प्यूटर पर कार्य करने वाले बच्चों के साथ इन बातों का ध्यान रखें–

- कम्प्यूटर ऐसी जगह रखें जहां से माता-पिता देख सके कि बच्चा क्या कर रहा है।
- कोशिश करें कि बच्चा ईयरफोन की जगह स्पीकर का प्रयोग करें।
- कम्प्यूटर पर कार्य करते समय कमरे में प्रकाश की पर्याप्त व्यवस्था हो।
- बच्चा लैपटॉप लेटकर ना देखे, कुर्सी व टेबल का प्रयोग करे, स्क्रीन को कम से कम 33 सेमी. की दूरी पर रखे।
- कार्य के बीच में बच्चा थोड़ा ब्रेक लेता रहे, पलकों को झपकाए, कोई दूर की चीज देखे। इससे आँखों की मांस-पेशियों को आराम मिलता है।
- जिन बच्चों का स्क्रीन टाइम ज्यादा है वो एंटी ग्लेयर चश्मे का प्रयोग करें।
- लैपटॉप व कम्प्यूटर की स्क्रीन के नजदीक जाकर या स्क्रीन छोटी कर ना देखने दें।

बाल प्रश्नोत्तरी-12

जीतें पुरस्कार। बाल मित्रों! 16 दिसम्बर का अंक पढ़ने के पश्चात् निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। अपने उत्तर 'उत्तर शीट' में भरकर 79765 82011 पर व्हाट्सएप करें। प्रथम 10 बाल मित्रों के नाम पाथेय कण में प्रकाशित किए जाएंगे तथा प्रथम 5 को पुरस्कृत भी किया जाएगा। प्रतियोगिता में 6 से 17 वर्ष तक के बाल-किशोर ही भाग ले सकते हैं। **उत्तर भेजने की अंतिम तिथि - 20 जनवरी, 2022**

1. पानीपत में मराठाओं और अफगान हमलावरों में युद्ध कब हुआ था?
(क) 14 जनवरी,1760 (ख) 10 जनवरी,1760
(ग) 15 जनवरी,1761 (घ) 20 जनवरी, 1765

2. महाराजा सूरजमल के राजकवि का नाम बताइए?
(क) मधुकांत (ख) सूदन (ग) राधेश्याम (घ) बांकीदास

3. राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस कब मनाया जाता है?
(क) 6 दिसम्बर (ख) 16 दिसम्बर (ग) 24 दिसम्बर (घ) 26 दिसम्बर

4. देश के पहले सीडीएस का नाम बताइए जो हाल ही में शहीद हुए?
(क) जनरल एमएम नरवणे (ख) जनरल दलबीर सिंह
(ग) जनरल विक्रम सिंह (घ) जनरल बिपिन रावत

5. कुन्नूर हेलीकॉप्टर दुर्घटना में शहीद होने वाले झुंझुनू के वीर कौन थे?
(क) स्कॅवाड्रन कुलदीप सिंह राव (ख) नायक जितेन्द्र कुमार
(ग) हवलदार सतपाल राई (घ) नानक गुरुसेवक सिंह

6. चार आम लोगों को अंतरिक्ष की सैर कराने वाले अमेरिकी उद्योगपति कौन हैं?
(क) जॉन फ्रेड्रिक्सन (ख) एलन मस्क (ग) बिल गेट्स (घ) मार्क जुकरबर्ग

7. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक कौन थे?
(क) लाला लाजपतराय (ख) रायबहादुर सुन्दरलाल
(ग) मदन मोहन मालवीय (घ) डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन

8. मेघालय के क्रांतिकारी उक्यांग नागवा का शहादत दिवस कब मनाया जाता है?
(क) 30 दिसम्बर (ख) 25 दिसम्बर (ग) 12 दिसम्बर (घ) 10 दिसम्बर

9. अब तक पाथेय कण द्वारा कितने विशेषांक प्रकाशित किए जा चुके हैं?
(क) 50 (ख) 55 (ग) 60 (घ) 45

10. दिल्ली विजय के बाद महाराजा सूरजमल ने दीपोत्सव किस स्थान पर मनाया?
(क) मानसी गंगा (ख) कुसुम सरोवर (ग) उद्धव कुंड (घ) दानघाटी

निम्नांकित उत्तर शीट भरकर इसी की फोटो वाट्सएप करें। (बाल प्रश्नोत्तरी -12)

उत्तर शीट - 1.( ) 2.( ) 3.( ) 4.( ) 5.( )
6.( ) 7.( ) 8.( ) 9.( ) 10.( )

नाम ....पिता का नाम...........................

उम्र .... पूर्ण पता ....

....पिन.......................

मोबाइल नं. ....

प्रसन्नता का नुस्खा

एक संत किसी टीले पर बैठे सूर्यास्त देख रहे थे । तभी एक सेठजी उनके पास आये।

वे पूछने लगे- स्वामीजी ! आपके चेहरे पर अत्यधिक प्रसन्नता है। मैं एक धनी व्यक्ति हूँ। मेरे पास सब कुछ है, पर मन में खुशी नहीं है। उसी की खोज में घर से निकला हूँ। दो साल हो गये, पर प्रसन्नता प्राप्त नहीं हुई। आप ही बताएं, उसे मैं कहाँ खोजूं?

संत ने एक कागज लिया और उस पर कुछ लिखने के बाद उनसे कहा- मैंने इसमें प्रसन्नता का सूत्र लिख दिया है, लेकिन इसे आप घर जाकर ही पढ़ना।

सेठ जी घर पहुँचे और बहुत जिज्ञासा के साथ उन्होंने कागज खोला।

उस पर लिखा था-''जहाँ शान्ति होती है, प्रसन्नता वहाँ खुद चली आती है। चाहे वह अपना ही मन क्यों न हो?''

पहचानो तो यह महापुरुष कौन है ?

बाल मित्रों! यहाँ एक महापुरुष का चित्र तथा उनके जीवन के बारे में कुछ संकेत दिये जा रहे हैं। संकेत के आधार पर चित्र को पहचानो और अपने ज्ञान की परीक्षा करो।

- आपने विदेशों में हिंदू हित एवं भारत हित में अनेक संस्थाएं बनाई।
- आपका जन्म अकोला (महाराष्ट्र) में हुआ था?
- आप 1992 में दीनदयाल शोध संस्थान के अध्यक्ष बने।

श्री लक्ष्मण श्रीकृष्ण भिड़े

राष्ट्रनायक सुभाष चन्द्र बोस

17

आलेख एवं चित्र
ब्रजराज राजावत

लाहौर कांग्रेस अधिवेशन 1929 में पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव पारित हो गया।... देश अब पूर्ण स्वतंत्रता के लिए अधीर हो उठा..

सुभाष के राष्ट्र व्यापी दौरों से अंग्रेज सरकार हिल गई...

सुभाष पर राजद्रोह का झूठा आरोप लगाकर नौ माह कठोर कारावास की सजा दी, साथ ही नाटकीय सहानुभूति दिखाने का प्रयास किया...

उनको जेल ले जाते समय जन सैलाब उमड़ पड़ा...

नेताजी की गिरफ्तारी पर नेहरु जी ने कहा...

श्रीसेन गुप्ता ने कहा...

पाक्षिक
पाथेय कण
1-15 जनवरी, 2022

आर.एन.आई.पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY /202/2021-23

अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY/ WPP - 01/2021-23

आगामी पक्ष के विशेष अवसर
पौष शुक्ल पक्ष, वि.सं.-2078
(3 से 17 जनवरी,2022)

जन्म दिवस

3 जनवरी (1760)	- वीर कट्टबोम्मन जयंती
3 जनवरी (1831)	- सावित्री बाई फुले जयंती
पौष शु.7 (9 जनवरी)	- गुरु गोबिन्द सिंह जयंती
12 जनवरी (1863)	- स्वामी विवेकानन्द जयंती
15 जनवरी (1911)	- स्वतंत्रता सेनानी वीरेन्द्र वीर जयंती
पौष पूर्णिमा (17 जनवरी)	- माता जीजाबाई जयंती

बलिदान दिवस/पुण्यतिथि

4 जनवरी (1970)	- बांध बनाने वाले हरिबाबा की पुण्यतिथि
7 जनवरी (2001)	- श्री लक्ष्मण श्रीकृष्ण भिड़े की पुण्यतिथि
11 जनवरी(1966)	- लाल बहादुर शास्त्री की पुण्यतिथि
11 जनवरी (1915)	- सरदार सेवा सिंह की शहादत
14 जनवरी	- चालीस मुक्तों का बलिदान
17 जनवरी (1872)	- रामसिंह कूका के गो भक्त शिष्यों का बलिदान

महत्वपूर्ण घटनाएं/अवसर

7 जनवरी (1026)	- सोमनाथ मंदिर का ध्वंस
9 जनवरी	- प्रवासी भारतीय दिवस
10 जनवरी	- विश्व हिंदी जयंती
13 जनवरी	- लोहड़ी
14 जनवरी	- मकर संक्रांति, माघ बिहू (असम)
15 जनवरी	- थल सेना दिवस
16 जनवरी (1941)	- अंग्रेजों की नजरबंदी से नेताजी की मुक्ति

पंचांग- पौष (शुक्ल पक्ष)
युगाब्द-5123, वि.सं.-2078, शाके-1943
(3 से 17 जनवरी,2022)

चतुर्थी व्रत - 6 जनवरी, **पंचक प्रारम्भ**-6 जनवरी (सायं 7.51बजे), **पंचक समाप्त**-10 जनवरी (प्रातः 8.49 बजे), **पुत्रदा एकादशी व्रत व लोहड़ी** - 13 जन., **मकर संक्रांति व रोहिणी (जैन) व्रत**- 14 जन., **प्रदोष व्रत** -15 जन., **माघ स्नान प्रारम्भ व सत्य पूर्णिमा व्रत**-17 जन.

ग्रह स्थिति

चन्द्रमा : 3 जनवरी **धनु** राशि में, 4-5 जनवरी **मकर** राशि में, 6-7 जनवरी **कुंभ** राशि में, 8 से 10 जनवरी **मीन** राशि में, 11-12 जनवरी **मेष** राशि में, 13 से 15 जनवरी उच्च की राशि **वृष** में तथा 16-17 जनवरी **मिथुन** राशि में गोचर करेंगे।

पौष शुक्ल पक्ष में **गुरु** और **शनि** पूर्ववत क्रमशः कुंभ व मकर राशि में बने रहेंगे। इसी प्रकार **राहु** और **केतु** भी वृष और वृश्चिक राशि में स्थित रहेंगे। **सूर्य** 14 जनवरी को दोपहर 2:29 बजे धनु से मकर राशि में प्रवेश करेंगे। **मंगल** 16 जनवरी की मध्याह्न 4:30 बजे वृश्चिक से धनु राशि में प्रवेश करेंगे। **बुध** 14 जनवरी सायं 5:10 बजे मकर राशि में रहते हुए वक्री होंगे। **शुक्र** यथावत धनु राशि में रहते हुए 7 जनवरी को पश्चिम में सायं 6:30 बजे उदय होकर 13 जनवरी को प्रातः 5:20 बजे पूर्व दिशा में अस्त होंगे।

जन्मदिवस पर शत शत नमन

प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी
वीर कट्टबोम्मन
3 जनवरी

(1760-1799)

प्रथम महिला शिक्षिका
सावित्री बाई फुले
3 जनवरी

(1831-1897)

सिखों के दसवें गुरु
गुरु गोबिन्द सिंह
पौष शु.7 (9 जनवरी)

(1666-1708)

पुण्यतिथि

भारत के दूसरे प्रधानमंत्री
लाल बहादुर शास्त्री
11 जनवरी

(1904-1966)

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक माणक चन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी,ए-10,22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालयः पाथेय भवन, 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-302017
सम्पादक - रामस्वरूप अग्रवाल
प्रेषण दिनांक 1,2,3,4 व 5 जनवरी, 2022 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में _____
_____
_____